B.A. III Hindi Hons के छात्रों के लिए.

काव्य के लक्षण का शेषांश।

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग, एस०एस० कॉ० जहानाबाद

पाश्चात्य साहित्यशास्त्र में भी काव्य के लक्षणों पर गहन विवेचन-विश्लेषण हुआ है। यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने लिखा है कि काव्य एक कला है और अनुकरण इसका मौलिक तत्व है। इसी प्रकार फिलिप सिडनी, डेनिस इत्यादि विद्वानों ने काव्य को प्रकृति का अनुकरण माना है - Poetry is an imitation of nature by a pathetic and numerous speech. डॉ० जानसन ने छन्दोबद्ध रचना को काव्य कहा है - Poetry is a metrical composition. कॉलरिज ने तो अपनी परिभाषा में भावुकता का पुट देते हुए यहाँ तक कह डाला - 'काव्य सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम विधान है'। जैसी भावुकता कॉलरिज में है, मैथ्यू आर्नाल्ड भी उससे अछूते नहीं हैं - काव्य सर्वाधिक आनन्द का साधन तथा अभिव्यक्ति का प्रतिरूप है। उपर्युक्त पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषा के अनुशीलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सभी ने काव्य के आत्मावाचिक गुण एवं आनन्द पर जोर दिया है। एक ओर शब्दों की श्रेष्ठता की बात भी है तो दूसरी ओर आनन्द और भावुकता की भी बातें हैं। फिर वही बात सामने आती है - वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम् या रमणीयार्थप्रतिपादक शब्द ही काव्य है। सच पूछा जाए तो सत्य किसी सीमा में आबद्ध नहीं हो सकता। जो सत्य पौर्वात्य देशों में व्याप्त है वही सत्य पाश्चात्य देशों में भी निवास कर रहा है। इसीलिए जिसे Ultimate truth कहा जाता है जिसे चरम सत्य कहा जाता है वह

रूप ही है। वैसे विलियम वर्ड्सवर्थ की काव्य परिभाषा भी किसी से कम नहीं है - Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings. It takes its origin in tranquility.

हिन्दी के प्राचीन एवं आधुनिक आचार्यों ने भी काव्य को परिभाषित करने का प्रयास किया है विशेषत: रीतिकालीन आचार्यों ने तो इस विषय पर गहन विवेचन विश्लेषण किया है। रीतिकाल के दो सौ वर्षों का काल तो लक्षणों के खंडन और मंडन में ही बीत गया है। यह साहित्य बड़ा विशद् एवं जटिल है। फिर भी इस सागर की कुछ बूंदों का अवलोकन किया जा सकता है।

आचार्य चिंतामणि का काव्य लक्षण -

सगुनालंकारन सहित, दोषरहित जो होइ।
शब्द अर्थ ताको कवित, कहत ~~[illegible]~~ विबुध सुकोइ।।

वैसे ही आचार्य श्रीपति ने लिखा -

शब्द अर्थ बिनु दोष, गुण, अलंकार रसवान।
ताको काव्य बखानिये, श्रीपति परम सुजान।।

ये तो मात्र दो उदाहरण हैं, किन्तु अधिकांश आचार्यों ने संस्कृत के आचार्यों के द्वारा दिए गए लक्षणों का पिष्टपेषण ही किया है। अतः इनकी कोई अलग सत्ता प्रतीत नहीं होती।

आधुनिक आचार्यों ने भी काव्य को परिभाषित करने का प्रयास किया है। आ० महावीर प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि में ~~[illegible]~~ 'जिस रचना से चमत्कारजन्य आनन्द मिलता हो उसे काव्य कहते हैं।'
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तो काव्य को दर्शन की सीमा में पहुँचा दिया है -
"जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है, उसे कविता कहते हैं।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कविता या काव्य में शब्द और अर्थ का समाहार होता है, उसमें रागात्मकता होती है। द और अर्थ का चमत्कार होता है और सहज प्रवाह होता है।